उच्च शिक्षा में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की मानसिक योग्यता एवं समायोजन का शोधपरक अध्ययन (करौली जिले के विशेष सन्दर्भ)

मुकेश कुमार वर्मा
प्रवक्ता, वीना मेमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा करौली (राज.)
महेश चन्द जाटव
प्रवक्ता, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजूकेशन, पदेवा करौली (राज.)
जगदीश प्रसाद शर्मा
शोधार्थी, शिक्षा संकाय राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
प्राचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजूकेशन, पदेवा करौली (राज.)

प्रस्तावना:

शिक्षा शब्द संस्कृत के 'शिक्ष' धातु से बना है। जिसका अर्थ है सीखना या सिखाना। यानि इस अर्थ में शिक्षा सीखने या सिखाने की प्रक्रिया है। शिक्षा के लिए विद्या शब्द का उपयोग किया जाता है। जिसका अर्थ है, जानना। 'एजुकेशन' शब्द लेटिन भाषा के चार शब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है प्रशिक्षित करना, अंदर से बाहर निकालना, पालन पोषण करना और आंतरिक से बाह्य की तरफ जाना।

शिक्षा व्यक्ति की अनिर्हित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया निभाने के लिए समाजीकृत करती है। समाज में एक सदस्य एवं जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। शिक्षा शब्द के प्रयोग को देखते यह दो रूपों में प्रयोग में लाया जाता है। व्यापक रूप में या संकुचित रूप में शिक्षा किसी समाज निश्चित समय तथा निश्चित स्थानों की सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा छात्र निश्चित पाठ्यक्रम को पढ़कर परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना सीखता है।

शिक्षा का विकासः

आजकल छात्र अंग्रेजी भाषा के प्रति ज्यादा जागरूक और सचेत हो गये है। प्रत्येक विद्यार्थी यह जानता है कि उसके लिए तथा भावी जीवन के लिए अंग्रेजी भाषा का क्या महत्व है।

आज के परिप्रेक्ष्य की बात करें तो हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम पढ़ना मानसिक योग्यता का कारण नहीं रह गया है। अपितु ये आर्थिक कारण ज्यादा बन गया। बालिका की मानसिक योग्यता (बुद्धि स्तर) में अंतर तो होता है किंतु उस स्तर तक जितना वह महसूस करेंगे। विद्यार्थी अपने माध्यम से शिक्षा से अपने व्यक्तित्व को निखारता है, जिससे उसकी प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है।

प्राचीन भारत में जिस शिक्षा व्यवस्था का निर्माण किया गया था, वह समकालीन विश्व की शिक्षा व्यवस्था से व उत्कृष्ट थी। कालांतर में भारतीय शिक्षा व्यवस्था का ह्यास हुआ। विदेशियों ने यहां की शिक्षा व्यवस्था को उस अनुपात में विकसित नहीं किया, जिस अनुपात में करना चाहिए था। अपने संक्रमणकाल में भारतीय शिक्षा को कई चुनौतियों व समस्याओं का सामना करना पड़ा। आज ये चुनौतियां व समस्याएं हमारे सामने है। लार्ॅड मैकाले द्वारा अंग्रेजी शिक्षा के संक्रमण के कारण भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था का अंत हुआ।

हायर एजुकेशन उच्च शिक्षा का अर्थ है सामान्य रूप से सबको दी जाने वाली शिक्षा। किसी विशेष विषय में में सूक्ष्म शिक्षा।जो महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, लिबरल आर्ट, एवं प्रौद्योगिकी संस्थानों आदि के द्वारा दी जाती है। प्राथमिक एवं माध्यमिक के बाद यह शिक्षा का तृतीय स्तर है जो प्रायः ऐच्छिक होता है। इसके अंतर्गत स्नातक परास्नातक एवं व्यावसायिक शिक्षा तथा प्रशिक्षण आते हैं।

शिक्षा का स्वरूप विषय के साथ भारत वर्ष में प्रतिष्ठित हुआ। उच्च शिक्षा देने वाले भारतीय गुरुकुलों की विशेषता थी कि उनमें प्रारंभिक शिक्षा से लेकर उच्चतम शिक्षा दी जाती थीं। भारत का उच्च शिक्षा तंत्र अमेरिका और चीन के बाद विश्व का तीसरा सबसे बड़ा उच्च शिक्षा तंत्र है।

पिछले 50 वर्षों में देश के विश्वविद्यालयों की संख्या में 11.6 गुना महाविद्यालयों में 12.5 गुना विद्यार्थियों की संख्या में 60 गुना और शिक्षकों की संख्या में 25 गुना वृद्धि हुई है। सभी को उच्च शिक्षा के समान अवसर सुलभ कराने की नीति के अंतर्गत संपूर्ण देश में महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

विद्यार्थी स्वयं इन सभी पक्षों में सामंजस्य संबंधों को विकसित करता है तो यह सुसमायोजित कहलाता है। इसी परिप्रेक्ष्य में समायोजन मापन द्वारा डिग्री कालेजों में

अध्ययनरत विद्यार्थी हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम की उपलब्धि के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया। ताकि शिक्षा के समय उद्देश्यों की पूर्ति की जा सकें। शिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन विद्यार्थियों की रूचि, आवश्यकता एवं बुद्धि स्तर के अनुरूप संपादित किया जाना चाहिए।

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी को शिक्षा प्रदान करना है, जिससे वह अपना विकास एवं उचित समायोजन कर सके।

अध्ययन का औचित्यः

प्रत्येक विद्यार्थी की मानसिक योग्यता अलग होती है, तथा किसी परिस्थिति में समायोजन करने की क्षमता भी अलग होती है। अध्ययन के द्वारा यह जानना हैं कि हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम से अध्ययनरत विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता एवं समायोजन पर क्या प्रभाव पड़ता है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

संबंधित साहित्य का अध्ययन शोध कार्य में सहायता करता है कि अन्य शोधकर्ताओं ने संबंधित समस्या के क्या हल निकालते हैं। कौन से प्रश्न अभी अनुचारित रह गए हैं। शोधकर्ताओं की मदद इस विषय पर भी करता है कि कहीं वह पुनः उसी विषय की तथा सेंपल की पुनरावृत्ति न हो जाए। यह पूर्व कल्पनाओं के साथ सुझाव देने में भी सहायक होता है, जिससे शोधकर्ता को शोध करते समय आसानी से आंकड़े उपलब्ध हो जाए।

सैंगर, कल्पना (2002) ने महाविद्यालयों में जाने वाली किशोर छात्राओं में बुद्धिमता एवं सृजनात्मकता के संदर्भ में समायोजन व भावनात्मक सुरक्षा का अध्ययन शीर्षक पर पी.एचडी. शोध कार्य किया। निष्कर्ष में पाया कि भावनात्मक सुरक्षा, असुरक्षा, स्पष्टता, स्वतंत्रता, उपलब्धि, संगठन, समायोजन और सृजनात्मकता से नकारात्मकता रूप से संबंधित है।

भावनात्मक सुरक्षा असुरक्षा, संघर्षपूर्ण, पारिवारिक वातावरण से सकारात्मक संयोग, स्वतंत्रता, सक्रिय वातावरण से सकारात्मक जबकि संयोग स्वतंत्रता, सक्रिय संगठन, व्यक्ति, सांस्कृतिक, नैतिक, धार्मिक, महत्वपूर्ण बुद्धि और सृजनात्मकता से संबंधित थी।

मार्टिन लुई (2003) ने पुरूष महिला शिक्षकों के मध्य उनकी व्यक्तित्व संबंधी आवश्यकताओं तथा समायोजन से संबंधी तनाव का अध्ययन किया। प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष प्राप्त हुए कि पुरुष एवं महिला अध्यापकों में समान स्तरीय तनाव पाया गया। महाविद्यालय विद्यालयों के पुरूष अध्यापक, महिला अध्यापकों की तुलना में अधिक तनावग्रस्त थे। कालेज स्तरीय महिला एवं पुरूष अध्यापकों में समान स्तरीय तनाव पाया गया।

उच्च शिक्षा से समायोजित पुरूष एवं महिला अध्यापकों में समान तनाव पाया गया। निम्न रूप से समायोजित महिला एवं पुरूष अध्यापकों में समान स्तर का तनाव पाया गया। उच्च व्यक्तित्व संबंधी आवश्यकता वाले महिला एवं पुरूष अध्यापकों में तनाव का एक जैसा स्तर पाया गया।

निम्न स्तर की व्यक्तित्व आवश्यकता रखने वाले पुरूष एवं महिला अध्यापकों में समान स्तर का तनाव पाया गया। माध्यमिक स्तरीय विद्यालय पुरूष अध्यापकों में समायोजन एवं तनाव में सार्थक संबंध पाया गया। माध्यमिक स्तरीय विद्यालयी महिला अध्यापकों में तनाव तथा समायोजन में महत्वपूर्ण नकारात्मक सह-संबंध पाया गया। समायोजन एवं व्यक्तित्व संबंधी आवश्यकताओं के मध्य घनात्मक सार्थक सह-संबंध पाया गया।

श्रीवास्तव गौरी (2003) ने अपने अध्ययन में ग्रोथ इन हायर एजुकेशन आफ वुमन इन इंडिया में पाया कि लड़कियों ने उच्च शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा में सहभागिता शुरू कर दी है। लड़कियां वर्तमान समय में अनेक पाठ्यक्रमों में प्रवेश ले रही हैं। जैसे एम.कॉम., इंजीनियरिंग, आर्किटेक्चर, चिकित्सा, व्यावसायिक पाठ्यक्रम इत्यादि सभी लड़कियों की व्यावसायिक शिक्षा में सहभागिता को प्रोत्साहित करते हैं।

धीरे-धीरे समाज में लिंग भेदभाव तथा गैर परंपरागत व्यावसायिक शिक्षा के प्रति लड़कियों को प्रोत्साहित करते हैं। शोध में पाया कि महिलाओं ने उच्च एवं व्यावसायिक शिक्षा में भाग लेना शुरू कर दिया है। वह पाठ्यक्रम जो महिलाओं के लिए विशेष रूचि के रूप में उभर रहे हैं। उपर्युक्त है यह महिलाओं का गैर पारंपरिक पाठ्यक्रमों में सहभागिता के मिथक को धीरे-धीरे महिलाओं की स्थिति में सुधार हो रहा है। अभी शहरी क्षेत्रों की झोपड़ पट्टियां एवं ग्रामीण क्षेत्रा की महिलाओं की वहीं पिछड़ी हुई स्थिति है।

एंडरसन नील एवं अन्य (2003) में यूरोपीयन समुदाय में विभिन्न व्यवसायों, सामान्य मानसिक योग्यता की वैधता का अलग विश्लेगुणात्मक शीर्षक पर प्रयोजनात्मक शोध किया। निष्कर्ष में पाया कि जाब जटिलता को सामान्य मानसिक योग्यता क्रियात्मक रूप में सामान्य करती है। जाब जटिलता में तीन वर्ग निम्न मध्यम एवं उच्च जटिलता पर सामान्य मानसिक योग्यता का परीक्षण किया। संयुक्त राष्ट्रों की तुलना में यूरोपीयन समुदाय के लोगों में समान परिणाम पाया गया।

सिंह एच., (2003) पुरूष महिला शिक्षकों के मध्य उनकी व्यक्तित्व संबंधी आवश्यकताओं तथा समायोजन से संबंधी तनाव का अध्ययन विषय पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने निष्कर्ष में पाया कि पुरुष अध्यापक, महिला अध्यापकों की तुलना में अधिक तनावग्रस्त थे। कालेज स्तरीय महिला एवं पुरूष अध्यापकों में समान स्तरीय तनाव पाया गया। उच्च रूप से समायोजित पुरूष एवं महिला अध्यापकों में समान स्तर का तनाव पाया गया।

उच्च व्यक्तित्व संबंधी आवश्यकता वाले महिला एवं पुरूष अध्यापकों में तनाव का एक जैसा ही स्तर पाया गया। निम्न स्तर की व्यक्तित्व आवश्यकता रखने वाले पुरूष एवं महिला अध्यापकों में समान स्तर का तनाव पाया गया। माध्यमिक स्तरीय विद्यालयी पुरूष एवं महिला अध्यापकों में समायोजन एवं तनाव में सार्थक संबंध पाया गया। माध्यमिक स्तरीय विद्यालय महिला अध्यापकों में तनाव तथा समायोजन में महत्वपूर्ण नकारात्मक आवश्यकताओं के मध्य घनात्मक आर्थिक सहसंबंध पाया गया।

सहारन, सुरेंद्र कुमार एवं प्रियंका सेठी (2003) ने माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की मानसिक योग्यता का समान जागरूकता, अभिवृत्ति एवं शिक्षण अभिक्षमता के संदर्भ में अध्ययन शीर्षक पर परियोजनात्मक शोध कार्य किया। शोध कार्य के निष्कर्ष में पाया कि आयु संस्था के प्रकार एवं लिंग के आधार पर मानसिक योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। क्षेत्र, आयु एवं लिंग के आधार पर सामान्य जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

गैर सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों में सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों की तुलना में सामान्य जागरूकता अधिक पाई गई। मानसिक योग्यता और सामान्य जागरूकता, मानसिक योग्यता एवं शिक्षण अभिक्षमता में सकारात्मक सार्थक सहसंबंध पाया गया। शिक्षण अभिक्षमता एवं मानसिक योग्यता मंे लिंग के संदर्भ में कोई परिवर्तन नहीं पाया गया।

वर्मा, रचना मोहन (2004) ने शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं में समायोजन और व्यक्तित्वशील गुणों का तुलनात्मक अध्ययन उन्होंने अपने अध्ययन के निष्कर्ष रूप में पाया। शहरी क्षेत्रों के माता-पिता अपने बच्चों की जरूरतें, रूचियों और उनके आराम की तरफ ध्यान देते हैं। वे उन्हें अच्छा वातावरण प्रदान करते है, ताकि उनके बच्चे पारिवारिक जीवन में समायोजन कर सकें।

लेकिन आजकल ग्रामीण क्षेत्रों में भी यद्यपि माता-पिता अधिक शिक्षित नहीं हैं। फिर भी वे बच्चों को पर्याप्त सुविधाएं और अच्छा पारिवारिक वातावरण देते हैं। यह अच्छे पारिवारिक समायोजन में सहायक है। इनके आंतरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व में कोई अंतर नहीं है। वर्मा, रचना मोहन (2004) ने ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विशेषक और समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर पी.एचडी. शोध कार्य 960 विद्यार्थियों पर किया।

अध्ययन के निष्कर्ष में प्राप्त किया कि व्यक्तित्व के प्रभावी विशेषकों में सार्थक अंतर पाया गया। ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों में शहरी छात्रा अधिक प्रबल व्यक्तित्व के पाए गए। ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में कम प्रतिभाशाली व अधिक प्रतिभाशाली व्यक्तित्वों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अंतरर्मुखी व्यक्तित्वों की श्रेणी में अधिक महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

अध्ययन से समाज स्वरूप तथा कार्यक्षेत्र में शिक्षा के माध्यमों का अलग-अलग होने पर उनकी मानसिक योग्यता तथा कार्यकुशलता पर प्रभाव समझने में मदद प्राप्त होगी।

शोध कार्य के प्रश्नः

1.स्नातक स्तर के कला व विज्ञान वर्ग के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता और समायोजन में अंतर का अध्ययन करना।

2.स्नातक स्तर के कलावर्ग व विज्ञान वर्ग के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता और समायोजन पर प्रभावों का अध्ययन करना।

शोध कार्य के उद्देश्यः

1.उच्च शिक्षा में अध्ययनरत कलावर्ग के हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का अध्ययन करना।

2.उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का अध्ययन करना।

3.उच्च शिक्षा में अध्ययनरत कलावर्ग के हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के समायोजन पर अध्ययन करना।

4.उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के समायोजन पर अध्ययन करना।

5.उच्च शिक्षा में अध्ययनरत कलावर्ग व विज्ञान वर्ग के हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता एवं समायोजन का सहसंबंध अध्ययन करना।

चरों की परिभाषा:

चर से तात्पर्य वस्तु, घटना तथा चीज से उन गुणों से होता है, जिन्हें मापा जा सकता है।

करलिंगर (1964) के अनुसार चर एक ऐसा गुण होता है, जिसकी अनेक मात्राएं हो सकती हैं।

आश्रित चर का अर्थ किसी भी प्रयोग या शोध में आश्रित चर वह होता है, जिसके बारे में शोधकर्ता या प्रयोगकर्ता कुछ पूर्व कथन करना चाहता है। सचमुच में यह चर चर होता है, जिसे प्रयोगकर्ता सावधानीपूर्वक निरीक्षण करता है तथा उसे रिकार्ड करता है।

मानसिक योग्यता:

मानसिक योग्यता एक व्यवहार मापने का गुण है। यह एक अनुमान है, जिसे व्यवहार से लिया गया है। विभिन्न विचारों ने मानसिक योग्यता को अलग-अलग प्रकार से समझाया है। प्रिंटर के विचारों के अनुसार यह एक ऐसी क्षमता है, जो स्वयं को सुनियोजित तरीके से जिंदगी में नई परिस्थितियों में ढालती है।

समायोजनः

समायोजन एक निरंतर प्रक्रिया है, जिसमें एक व्यक्ति स्वयं और उसके अपने पर्यावरण के बीच अधिक मैत्रीपूर्ण/मधुर संबंध पैदा करने के लिए अपना व्यवहार बदलता है।

मनोविज्ञान में परस्पर विरोधी आवश्यकताओं को संतुलित करने की व्यवहार-संबंधी प्रक्रिया को समायोजन कहते हैं। इसी प्रकार पर्यावरण की कठिनाइयों एवं बाधाओं को ध्यान में रखते हुए व्यवहार में जो परिवर्तन किए जाते हैं, उन्हें समायोजन कहते हैं।

स्वतंत्र चरः

स्वतंत्र चर वैसे चर को कहा जाता है, जिसमें प्रयोगकर्ता द्वारा जोड़-तोड़ किया जाता है। दूसरे शब्दों में स्वतंत्रः चर वह चर है, जिसके मूल्यों में प्रयोगकर्ता परिवर्तन करता है और इस परिवर्तन का प्रभाव उस आश्रित चर पर पड़ता है। यह देखता है।

विद्यार्थी- विद्या और अर्थी जिसका अर्थ होता है, विद्या चाहने वाला।

शोध उपकरण:

अनुसंधान के आंकड़ों का संकलन करने के लिए कुछ साधनों की आवश्यकता होती है। जिसके सहारे शोधकर्ता अपने उद्देश्यों की प्राप्ति कर सकता है। इन्हीं साधनों को उपकरण कहते हैं। प्रस्तुत शोधकार्य निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

1-मानसिक योग्यता स्केल (G.I.T.)- Rama Tiwari and Ram Pal.

2-Adjustment Inventory for college students - A.K.P. Singh and R.P. Singh

परिसीमाएं:

शोध की समस्या और एकल शोधकर्ता के समय और सामर्थ्य को दृष्टि में रखते हुए इस शोध का सीमांकन निम्न प्रकार किया गया है-

1.यह शोधकार्य करौली जिले के स्नातक कलावर्ग व विज्ञान वर्ग कालेजों में हिन्दी और अंग्रेजी स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों पर सीमित है।

2.अध्ययन के न्यायदर्श में स्नातक कालेजों में अध्ययनरत बालक और बालिकाओं को सम्मिलित किया गया है।

3.वर्तमान में अध्ययनरत करौली जिले के 10 स्नातक कालेजों को सम्मिलित किया गया है। सभी विद्यार्थी केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित शासकीय उच्च शिक्षा महाविद्यालयों से तथा निजी अशासकीय उच्च शिक्षा महाविद्यालयों को लिया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1.अग्रवाल, जे. सी. (1996): एजुकेशनल रिसर्च नई दिल्लीः आर्य बुक डिपो।

2.बैस, डॉ. नरेन्द्र सिंह एवं राजोरिया ऐ. के. (2006), शिक्षा मनोविज्ञान, जैन प्रकाशन मंदिर, जयपुर।

3.कोठारी सी. आर. (1986), रिसर्च मेथोडोलाजी, नई दिल्लीः विली इस्टर्न लिमिटेड नई दिल्ली।

4.कौल, लोकेशन (2007), शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, नई दिल्लीः विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि.।

5.मिश्रा. डा. एम.के. (2009), समायोजनात्मक, मनोविज्ञान नई दिल्लीः अर्जुन पब्लिशिंग हाउस।

6.पाठक. पी. डी. (2011), शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।

7.गुप्ता डा. रेणु (2007), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, नई दिल्लीः जगदम्बा पब्लिकेशन कम्पनी।

8. सिंह गया तथा राय, अनिल कुमार (2013), शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ आर. लाल बुक डिपो मेरठ।

9.जी.सी. (2011) अध्यापक शिक्षा अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा-2।

10.लीला, ए.वी. एस. (1998) महाविद्यालय के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व लक्षणों के संदर्भ में धार्मिकता व समायोजन का अध्ययनः भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका वाल्यूम 16, संख्या 1 जून-जुलाई, 1998